

प्रीतम कुमार 'निषाद'
गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

अहोश्री युगपति बुझनुक प्रियजन

आगत श्री युग देखैत कहू

सार्थक ज्ञान-विज्ञान सहारे

नाश बुद्धिकेँ फेकैत रहू

शुभचिन्तक होऊ नव पीढ़ीकेँ

पथ निर्देशक बनि बढ़ियौ

लोक समाजक श्रम-विधान संग

प्रीतम उपदेशक गढ़ियौ

जगत लोक मंगल पथ जोहए

खुखदा सांझ-विहान यौ, सगरो श्रद्धा... ।।0।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'
गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

बाट औ घाट केओ बिगाड़ैत रहल
ज्ञानी बाउर जकाँ बमकी दैत कहल
किछुयो सूझए कहाँ आब देखब कथी
अगवे दुर्दिन हँसए सुन्न कोठा महल
भाव-भाषाक अकबक्की कोनटा धएने
देखि कलजुग कहए काल पुरखा छलाह
गाम केर भलमानुष जकाँ ओ छलाह
काल पुरखा छलाह, गाम पुरखा छलाह ।।4।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

छल-प्रपंचक राजनीति...
फूइस, पेंच, गलबैहिया धेने
गाम-घरमे रीत-कुरीति
ज्ञानक मन्दिर इसकुल जर्जर
दसगरजा घर सभटा गड़बर
जत्तय अन्हरा डिठरा बमकै
चतुर चलाको चुगला चमकै
दाँव-पेंच दोगलई कैं दलाली
औनी पथारी सभ दऽ रहल अछि
तैं नें हम विकासक प्रयास कऽ रहल छी
मुदा सर्वग्रास भऽ रहल अछि
ई विसंगति कैं मानए के?
ई विसगतिकैं जानए के?
कीऽऽऽ एहने हम विकास कऽ रहल छी?
जे सर्वग्रास औ ह्रास भऽ रहल अछि?

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

अछि जन प्रतिनिधि मौका परस्त।
भारत मिथिला अछि अस्त-व्यस्त।।
सत्ता सेवक खुशहाल मस्त।
कोन भष्ट पतिक अछि वरद हस्त।।
आहत अगस्त आहत अगस्त...।।0।।

किछु संविधान सुख अछि निरस्त
मर्यादित अछि-फिरका परस्त
किए, आतंकी दिन-दिन प्रशस्त
राष्ट्रीयताकेँ देवए शिकस्त...।।0।।

आशाक तिरंगा कोटि हस्त
झण्डोत्तोलन भए रहल सस्त
औ, सर्व धर्म समभाव पस्त
हाय, राष्ट्र पर्व केर उदय-अस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।।0।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'
गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन, करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

ज्ञान धरम घेंट जोड़ि कऽ कानए
बकुआएल भगवान यौ...
सगरो श्रद्धा भक्ति कनैए
मठ-मस्जिद संस्थान यौ...
ज्ञानी-पण्डित मुल्ला-साधु
बना रहल शैतान यौ...
सगरो श्रद्धा... ।।0।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)